International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 10-08-2020; Accepted: 25-08-2020; Published: 11-09-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 24-26

वर्तमान सन्दर्भ में मनु शर्मा के पौराणिक उपन्यासों का महत्व

धर्मेन्द्र कुमार सिन्हा
अध्यापक, हिंदी विभाग, डी ए वी झारखंड, भारत

सारांश
भारतीय संस्कृति में धर्म का अत्यधिक महत्व है। हमारे समाज में प्रातः काल उठकर सर्वप्रथम माता पिता गुरु एवं अग्रजों के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लेने की परंपरा है। मनु शर्मा जी के उपन्यासों में धर्म का महत्व प्रेरणादायक रही है जैसे व्यक्तिगत धर्म, समाज धर्म, राष्ट्र धर्म, विश्व धर्म, मानव धर्म, अलौकिक धर्म, पत्नी धर्म, शिष्य धर्म का ज्ञान दैनिक जीवन में अति आवश्यक है। शर्माजी ने "कृष्ण की आत्मकथा ", "द्रोण की आत्मकथा", " गांधारी की आत्मकथा" तथा कर्ण की आत्मकथा में माता-पिता के प्रति श्रद्धा तथा गुरु जनों के प्रति विनम्रता युक्त श्रद्धा अभिवादन तथा सेवा भाव दिखाई देता है। इनके अधिकांश प्रमुख पात्र अपने माता-पिता एवं गुरुजनों का सम्मान करते हैं। कृष्ण तो नंद बाबा, मामा कंस, गुरुजनों सभी के चरण स्पर्श करते हैं। यहाँ तक कि जब युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में आए सभी अतिथियों के पाँव धोने का काम भी स्वयं करने लगते हैं। इस प्रकार यह देखा जाता है कि मनु शर्मा जी ने पौराणिक उपन्यासों में अनेक स्थलों पर मित्र,अतिथि और राजपुत्रों के आगमन पर होने वाली स्वागत की औपचारिकताओं का विस्तृत वर्णन किया है।

मूल शब्द: नैतिक मूल्यों की स्थापना, नारी-मुक्ति, धन एवं पद का महत्व, पारिवारिक, राजनीतिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण, स्वार्थ लोलुपता, नारी-मुक्ति, विवाह-परम्परा, ईश्वरीय अवतार, धर्म का महत्व

प्रस्तावना
उपन्यास हिंदी साहित्य की सबसे सशक्त विद्या है, जिसमें लेखक सामाजिक, पारिवारिक,राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक दृष्टिकोण को पूरी समग्रता के साथ प्रतिबिंबित करता है। यही कारण है कि पद्य में महाकाव्य न लिखकर गद्य में महाकाव्य उपन्यासों के रूप में लिखे जा रहे हैं। गद्यात्मक महाकाव्य जीवन की झांकी को जहां एक ओर प्रस्तुत करता है वहीं दूसरी ओर लोकमंगल की भावना से भी प्रेरित करता है। लोकमंगल की भावना हमारी पौराणिक धरोहर इसलिए आज के इस भौतिकवादी युग में पौराणिक उपन्यासों का महत्व नितांत आवश्यक है। कथाकार मनु शर्मा पौराणिक उपन्यासों के माध्यम से अतीत की संस्कृति को वर्तमान के संदर्भ में जोड़ते हैं। कथाकार पौराणिक आख्यानों के माध्यम से जहाँ एक ओर नए जीवन संदर्भों को व्यवस्थित एवं निश्चित करने का प्रयास किया है वहीं दूसरी ओर प्राचीन कथाओं के द्वारा नवीन चेतना का संचार कर अपने उपन्यासों में पौराणिक पात्रों को जीवंत कर प्रेरक पक्षों को एक नए दृष्टिकोण तथा आस्था के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। आधुनिक चेतना प्राचीन विश्वासों एवं पुरातन मान्यताओं की विरोधी रही है, इसलिए जन समुदाय को नई दिशा तथा जीवन मूल्य प्रदान करने के लिए उपन्यासकार पौराणिक साहित्य की ओर उन्मुख हुए हैं। शर्माजी पुराणों में वर्णित नायकों से संबंधित अलौकिक तथा अतिरंजित बातों को नकार कर पौराणिक चरित्र नायकों को मानव जीवन के सामान्य धरातल पर स्थापित कर अतीत के आईने में वर्तमान की समस्याओं को सम्यक ढंग से प्रस्तुत किया है। उनके समृद्ध रचना संसार में आठ खण्डों में प्रकाशित 'कृष्ण की आत्मकथा' भारतीय भाषाओं का विशालतम उन्यास है। इसके अतिरिक्त उन्होंने महाभारत के प्रायः सभी प्रमुख पात्रों को केंद्र में रखकर आत्मकथात्मक उपन्यासों की रचना की है, जिनमें 'कर्ण की आत्मकथा', 'गंधारी की आत्मकथा', 'द्रोण की आत्मकथा','द्रोपदी की आत्मकथा','अभिशप्त कथा' आदि। शर्माजी वर्णित उपन्यासों में महाभारत के पात्रों का आत्ममंथन कर उनकी मानसिक दशा का वर्णन इतना जीवंत रूप से वर्णन किया है कि सभी पात्र वर्तमान युग के हीं पात्र प्रतीत होते हैं। उन्होंने पौराणिक उपन्यासों के पात्रों को प्रतीक बनाकर आधुनिक भारत में बढ़ती दास्य मनोवृति, राजनीतिक हलचलें, निजी स्वार्थपरतायें, बुद्धिजीवियों के मुखौटाधारी चेहरे और दोहरे मानदंड युक्त जिंदगी, राजनीति की सर्वत्र वर्चस्वता आदि का सामाजिक परिपेक्ष में वैज्ञानिक विश्लेषण किया है। नवीन दृष्टि से कर्मयोग मिथकीय और ऐतिहासिक कथाएं एवं उनसे संबंधित घटनाओं का समन्वय करते हुए वर्तमान परिपेक्ष में प्रस्तुत कर, उसे समाजवादी चिंतन से जोड़ने का अथक प्रयास किया है।

नैतिक मूल्यों की स्थापना
कथाकार ने 'कृष्ण की आत्मकथा' के माध्यम से श्रीकृष्ण के चरित्र को नया आयाम देते हुए उनके रसिक बिहारी लीला-प्रिय सहस्त्र रमणी रूप का वर्णन किया है तथा उन्हें श्रीराम की तरह मर्यादा पुरुषोत्तम तथा एक नई नैतिकता को स्थापित करने वाले व्यक्तित्व के रूप में प्रस्थापित किया है। भौमासुर के विनाश के पश्चात बंदनी बनाई गई सोलह सहस्त्र रमणियों की मुक्ति और भविष्य के संदर्भ में कृष्ण द्वारा उन सभी को स्वीकारना, एक नई मर्यादा के निर्माता के रूप में प्रतिष्ठित करता है। कृष्ण द्वारा गोपियों की मटकियों के फोड़ने के प्रसंग को भी उन्होने तत्कालीन समाज की एक गहरी और राजनीतिक आवश्यकता बतलाया है। कथाकार के अनुसार कृष्ण में अपने पराये का कोई भेद नहीं है। वह यदि भेद करते हैं तो उसका मापदंड, न्याय-अन्याय और सत्य-असत्य को मानते। उनकी दृष्टि में व्यक्ति बड़ा ना ज्ञान या धन से होता है और ना हीं बल से, व्यक्ति तो केवल सदाचार से बड़ा होता है। यही कारण है कि कृष्ण अपने अनेक राज्य अधिकारियों के समक्ष मलिन, धूल-धूसरित और दुर्बल सुदामा के आगे बढ़ने पर उसे अपने हृदय से लगा लेते हैं। कथाकार कृष्ण को दार्शनिक रूप में प्रकट करते हुए लिखा है कि कृष्ण सुदामा से कहते हैं-"बात सारी यादव जाति की है। जब व्यक्ति धन, सत्ता और शक्ति से प्रमाद हो जाता है तो वह समाज प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ने के लिए तत्पर हो जाता है। यदि यादवगण शीघ्र हीं न सँभले तो इनका विनाश होना तय है। प्रकृति का चक्र जिसे नीचे से ऊपर ले जाता है उसे ऊपर से नीचे भी ले आता है। कृष्ण के चरित्र में नारी के प्रति सम्मान को प्रमाणिकता प्रदान करने के लिए सोलह हजार रानियों के साथ सामूहिक विवाह की कथा को कथाकार ने शिव के समान विषपान के रूप में दिखाकर समाज में नारी की मान्यता स्थापित करवाया है। रुक्मिणी विवाह भी नारी सम्मान की बहुत बड़ी घटना है, जिसमें नारी को उसका अभिष्ट मिले, इस विचारधारा का पोषण किया गया है।

नारी-मुक्ति

कथाकार ने आधुनिक नारी की मुक्ति और उनके अधिकारों के प्रति सचेत करने का प्रयास सुशीला के माध्यम से किया है। सुशीला एक आदर्श और कर्तव्य प्राण भारतीय नारी है। वह जहाँ एक ओर ममता करुणा और संवेदनशीलता की प्रतिमूर्ति है तो दूसरी ओर पतिव्रता, पति की सत्य पथ-प्रदर्शिका। वह अतिथि सेवा को अपना धर्म मानती है। वह सब को भोजन कराने के उपरांत ही स्वयं भोजन करती है। जब बाबा कहते हैं-"यह बहुत बुरा प्रचलन है कि पहले सब खा ले तब अन्नपूर्णा खाएगी। उसके लिए चाहे कुछ बच्चे या ना बचे।" तब सुशीला कहती है-" बाबा रसोई का दायित्व मुझ पर है इसलिए सबको खिला कर खाना हीं मेरा धर्म है।" कथाकार ने वर्तमान संदर्भ में नारी द्वारा घर की परिधि से निकलकर कोई काम धंधा या नौकरी-पेशा करना, नारी मुक्ति और उनके अधिकारों के लिए चलाए जा रहे आंदोलन के पक्ष में सुशीला के माध्यम से पति को गृहस्थी के साधारण कार्य से मुक्त करना तथा उनके द्वारा किए गए कुछ श्रेष्ठतर और उच्चतर कार्यों में संलग्न रहना चाहती है। सुशीला सुदामा से कहती है-"आप समर्थ हैं पर आपके सामर्थ्य के लिए थोड़ा- सा धन अर्जित करने जैसे साधारण कार्य भी करना चाहती हूँ। मैं आपकी संगिनी हूँ। बच्चों की माँ भी हूँ। यदि मैं जुटा सकूँ तो आप इन छोटी-मोटी चिंताओं से मुक्त होकर कुछ इतर कर पाएँगे।" नारी पात्रों में गांधारी द्रोपदी, रुक्मिणी, कुंती आदि प्रमुख पात्र हैं, जिनमें गांधारी शिवभक्त न्याय का पक्षधर है। वह सात्विक बुद्धि के कारण अपने भाई शकुनी से चिढ़ती है किंतु बाद में पटरानी बनने की महत्वाकांक्षा, दुर्योधन को सम्राट बनाने की लालसा उसे कर्तव्य पालन से डगमगा देता है। यही कारण है कि गांधारी अत्यधिक निष्ठा पूर्ण कार्यों में पति और पुत्रों का साथ नहीं देती है और द्रोपदी को अपमानित होने से बचाती है।अंत में शोक में कृष्ण को सापित भी करती है। नारी जीवन का करुण रूप कुंती के रूप में प्रदर्शित होती है। कुंती पहले पति के लिए तथा बाद में बच्चों के भविष्य की चिंता में पूरा जीवन ध्यान, जप, उपासना में लगा देती है। नारी चरित्रों में द्रोपदी तो प्रतिशोध की अग्नि में जलती ऐसी कन्या थी जो जीवन भर खुले केशव की प्रतिज्ञा में जलती रहती है। रेवती ऐसी वीरांगना थी जो संकट के समय कृष्ण के पिता का शत्रु से मुक्त करती है।

धन एवं पद का महत्व

भृगुदास समाज के प्रतिनिधि के रूप में उभर कर आया है जो अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए महत्वपूर्ण व्यक्तियों के इर्द-गिर्द लोलुप सियार की भांति मंडराता रहता है उसकी दृष्टि में ज्ञान के लिए कोई सम्मान है, ना व्यक्ति के सदाचार के लिए। उसके लिए महत्व है केवल धन एवं पद का। वह इन सभी अवगुणों को अपनी संतान में भी देखना चाहता है। जब भृगुदास द्वारिका के गुरुकुल में श्री कृष्ण के साथ सुदामा को देखता है तो वह स्वयं को विचित्र स्थिति में पाता है। उसकी दृष्टि कभी कृष्ण पर रूकती है तो कभी सुदामा पर। कभी उसके चेहरे पर ऐसे भाव आते हैं जैसे वह स्वर्ग में पहुँच गया और कभी लगता है, जैसे उसने कोई प्रेत देख लिया। वर्तमान परिवेश में ऐसे सैंकड़ों भृगु दास समाज में फैले हुए हैं जो केवल अपना हित करने में लगे हुए हैं। वर्तमान समय में इस प्रकार के दोष मंदिर में बैठा पुजारी भी कर रहा है जो मंदिर में पूजा नहीं करता बल्कि एक ठेका तय करता है कि इतना धन देने पर वह पूरी तल्लीनता से मूर्ति के दर्शन कर आएगा और उसकी अपेक्षाओं पर खरे न उतरने की स्थिति में अपमानित भी होना पड़ता है। निर्धन सुदामा को देखकर पुजारी घृणा से मुँह फेर लेता है और मन ही मन सुदामा के चले जाने की प्रतीक्षा करने लगता है। उसका व्यवहार सुदामा के लिए उपेक्षित रहा। पुजारी को सुदामा में कोई रुचि नहीं रह गई थी इस बात को सुदामा मन ही मन समझ चुका था।

स्वार्थ लोलुपता

दर्शनाचार्य सुखदेव जी संकीर्ण स्वार्थी और बहुत बड़े चाटुकार थे। सुदामा को दर्शनाचार्य का परिचय कराते हुए कृष्ण उन्मुक्त और प्रफुल्लित स्वर में बोलते हैं- "हमारे दर्शनाचार्य चाटुकारिताचार्य भी हैं। सुदामा इनसे सावधान रहना।" समकालीन परिवेश में आचार्य ज्ञानेश्वर कुलपति और दर्शनाचार्य सुखदेव उस अधिकांश बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, जो अपने संकीर्ण स्वार्थों की पूर्ति हेतु राजपुरुषों की चाटुकारिता कर बुद्धिजीवी वर्ग की प्रतिष्ठा को मलिन करने में सक्रिय हैं। मनु शर्मा के पौराणिक उपन्यासों में इन पात्रों के अतिरिक्त अनेक ऐसे पात्र हैं,जो वर्तमान संदर्भ का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनमें धर्मराज युधिष्ठिर का चरित्र है, जो अपनी सत्यता, धर्मप्रियता तथा न्यायप्रियता के लिए हर कष्ट सहने को तैयार रहते थे। उनके पूरे जीवन में अर्ध-सत्य कथन का एकमात्र उदाहरण है,-" अश्व्थामा हतो नरो वा कुंजारोवा" और वह भी श्री कृष्ण द्वारा प्रेरित किए जाने पर। इसके अतिरिक्त उनके पूरे जीवन में एक भी ऐसी घटना नहीं है जिसके कारण उनके धर्मराज होने पर ऊँगली उठाई जा सके। 'कर्ण की आत्मकथा' में प्रदर्शित भाव वर्तमान संदर्भ में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। कर्ण का चरित्र अध्यात्मिक अनुशासन से बंधा है जो आधुनिक परिवेश में प्रेरणा का विषय है। उस समय का सामाजिक परंपरा कुछ ऐसी थी जो स्वस्थ और कल्याणकारी नहीं थे। समाज के बीच शूद्र तथा आदिवासी जातियाँ अंत्यज मानी जाती थी जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें किसी प्रकार की शिक्षा और व्यवस्थाएं से वंचित होना पड़ता था। वे अनेक स्थलों पर योग्यता रहने के बावजूद भी राजपुत्रों तथा उच्च जाति के लोगों द्वारा अपमानित किए जाते थे। उदाहरण के तौर पर कर्ण तथा एकलव्य के चरित्र को देख सकते हैं। स्वयंवर में द्रोपदी भी उसे अपमानित करती हुई कहती है-"मैं सूत-पुत्र का वर्णन नहीं करूंगी।" सामाजिक तिरस्कार के कारण उसका स्वाभिमान आहत होता रहता है परंतु उसकी दानवीरता,वचन निष्ठाता में कोई कमी नहीं आती। इसी प्रकार पितामह, आचार्य द्रोण आदि का चरित्र भी अनैतिक नहीं है। वे जानते हैं कि अन्याई दुर्योधन का साथ दे रहे हैं। पर वह ऐसा करने के लिए विवश हैं किंतु फिर भी अर्जुन और पांडवों के प्रति धार्मिक निष्ठा एवं मंगल कामना के कारण वे अपनी मृत्यु का उपाय स्वयं अर्जुन को बता देता हैं।

विवाह की परंपरा

विवाह की परंपरा भी वर्तमान समय में पौराणिक ही मान्यता के अनुसार बनी हुई है। आज भी मनपसंद वर चुनने की पौराणिक परंपरा के अनुरूप हीं चल रही है। कृष्ण को स्वयं अपनी बहन सुभद्रा का विवाह दुर्योधन से रोकने के लिए अर्जुन द्वारा अपहरण करना पड़ता है। कृष्ण को भी रुक्मणी और सत्यभामा से विवाह करने के लिए संघर्ष करना पड़ा था। पौराणिक उपन्यासों के माध्यम से कथाकार ने वर्तमान समाज के जनजीवन के स्तर की ओर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किये हैं। उनके अनुसार प्रजा राजा के अच्छे होने पर सुख का अनुभव करती है और बुरे होने पर दुख का। अत्याचारी शासक की प्रजा सदैव उसके विनाश के लिए देवी से प्रार्थना करती है। अत्याचार से पीड़ित प्रजा भी नारद की भविष्यवाणी से कृष्ण के द्वारा अपना उद्धार देख रही थी। नारद आवेश में आते हुए कंस से कहते हैं- "इतिहास इस बात का साक्षी है कि निरंकुशता और अत्याचार के मध्य ही उसके विनाश का बीज भी होते हैं। तेरा अंत तेरे पास हीं है। कैसी विडंबना है कि हर निरंकुश शासक के अत्याचार की पराकाष्ठा एक ईश्वर को जन्म देती है।"

धर्म का महत्व

भारतीय संस्कृति में धर्म का अत्यधिक महत्व है। हमारे समाज में प्रातः काल उठकर सर्वप्रथम माता पिता गुरु एवं अग्रजों के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लेने की परंपरा है। मनु शर्मा जी के उपन्यासों में धर्म का महत्व प्रेरणादायक रही है जैसे व्यक्तिगत धर्म, समाज धर्म, राष्ट्र धर्म, विश्व धर्म, मानव धर्म, अलौकिक धर्म, पत्नी धर्म, शिष्य धर्म का ज्ञान दैनिक जीवन में अति आवश्यक है। शर्माजी ने "कृष्ण की आत्मकथा ", "द्रोण की आत्मकथा", " गांधारी की आत्मकथा" तथा कर्ण की आत्मकथा में माता-पिता के प्रति श्रद्धा तथा गुरु जनों के प्रति विनम्रता युक्त श्रद्धा अभिवादन तथा सेवा भाव दिखाई देता है। इनके अधिकांश प्रमुख पात्र अपने माता-पिता एवं गुरुजनों का सम्मान करते हैं। कृष्ण तो नंद बाबा, मामा कंस, गुरुजनों सभी के चरण स्पर्श करते हैं। यहाँ तक कि जब युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में आए सभी अतिथियों के पाँव धोने का काम भी स्वयं करने लगते हैं। इस प्रकार यह देखा जाता है कि मनु शर्मा जी ने पौराणिक उपन्यासों में अनेक स्थलों पर मित्र,अतिथि और राजपुत्रों के आगमन पर होने वाली स्वागत की औपचारिकताओं का विस्तृत वर्णन किया है। द्रोण की आत्मकथा' में गुरु द्रोण का

वर्णन भी एक स्नेही पिता के रूप में हुआ है जो अपने पुत्र के कारण हस्तिनापुर के राजकुमारों के आचार्य बनना स्वीकार करते हैं क्योंकि अपनी निर्धनता की छाया पुत्र पर पड़ने नहीं देना चाहते हैं। पुत्र मोह का अंधेरा संसार में किसी भी अंधेरे से घना होता है और जब व्यक्ति इस अंधेरे में भटक जाता है तब जल्दी रास्ते पर नहीं आता है।

उपसंहार

शर्माजी ने अपने पौराणिक उपन्यासों के माध्यम से यह संदेश देना चाहते हैं कि ना केवल दुर्योधन, शकुनी आदि पात्रों में ही दुष्ट प्रवृत्तियों का वास था अपितु मानव मन में परिस्थिति वश क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, अहंकार आदि को प्रवृत्तियों का वास होता है। मनुष्य तो परिस्थिति वश आदर्श बना रहता है। जब तक छिपी हुई भावना अपने उग्र रूप में सामने आती है, तब तक जीवन के आदर्श, नैतिक मूल्य पीछे छूटने लगते हैं। वर्तमान समय में राजनीतिक भ्रष्टाचार, सामाजिक अन्याय, अत्याचार, शोषण और अवसरवादिता मानव मन में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देती है। अतः जो अतीत में था वह वर्तमान में भी है, इसलिए महाभारत कालीन पात्र एवं घटनाएं उपन्यास के माध्यम से हमारे जीवन से जुड़ी समस्याओं के समीप आ गए हैं। जीवन एक महासभा है तथा प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में दो तरह का संघर्ष करना पड़ता है। एक बाहरी शत्रुओं से और दूसरा आंतरिक शत्रुओं से। बाहर के शत्रु पर विजय पाई जा सकती है किंतु अंदर के शत्रु काम, क्रोध,मोह, लोभ, आदि पर काबू पाना मुश्किल है। जिस किसी ने भी इन पर विजय पा लिया है, उसका जीवन सफल और सार्थक है। इस तरह स्पष्ट रूप से देखा जाता है कि मनु शर्मा जी के पौराणिक उपन्यासों के सभी पात्र वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रेरणा का स्रोत हैं।यही कारण है कि शर्माजी को 2015 में उल्लेखनीय साहित्य सेवाओं के लिए भारत सरकार ने पद्मश्री से अलंकृत किया था। वहीं उत्तर प्रदेश सरकार के सर्वोच्च सम्मान 'यश भारती' सम्मान से भी उन्हें सम्मानित किया गया।

सन्दर्भ सूची

1. संस्कृति के चार अध्याय-रामधारी सिंह दिनकर
2. विचार और वितर्क-हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य भवन
3. भारतीय संस्कृति के स्वर- महादेवी वर्मा राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
4. भारतीय संस्कृति-शिवदत्त ज्ञानी, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली
5. भारतीय दर्शन-राधाकृष्ण,राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
6. रामचरित मानस- गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस
7. साहित्य का समाज-डॉ नगेन्द्र
8. हमारी जीवंत संस्कृति-डॉ रामानन्द तिवारी, शर्मा ब्रदर्स प्रेस
9. भारतीय संस्कृति और इतिहास-डॉ सत्यकेतु विद्यालंकार, सरस्वती सदन
10. 'कृष्ण की आत्मकथा- मनु शर्मा प्रभात प्रकाशन दिल्ली
    - नारद की भविष्यवाणी
    - दुरभिसंधि
    - द्वारका की स्थापना
    - लाक्षागृह
    - खांडव दाह
    - राजसूय यज्ञ
    - संघर्ष
    - प्रलय
11. कर्ण की आत्मकथा' - मनु शर्मा प्रभात प्रकाशन दिल्ली
12. 'गंधारी की आत्मकथा' - मनु शर्मा प्रभात प्रकाशन दिल्ली
13. 'द्रोण की आत्मकथा' - मनु शर्मा प्रभात प्रकाशन दिल्ली
14. द्रोपदी की आत्मकथा' - मनु शर्मा प्रभात प्रकाशन दिल्ली
15ण 'अभिशप्त कथा' - मनु शर्मा प्रभात प्रकाशन दिल्ली